जनजातीय धार्मिक अनुष्ठान एवं देवलोक की अवधारणा
(गोंड जनजाति के विशेष संदर्भ में)

डॉ धीरा शाह सहायक प्राध्यापक इतिहास, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदा (म.प्र.)

सारांश– गोंडवाना भू–भाग में निवासरत गोंड जनजाति की अदभूत चेतना उसकी सामाजिक प्रथाओं, मनोवृत्तियों, भावनाओं, आचरणों, तथा भौतिक पदार्थों को आत्मसात करने की कला की परिचायक है, जो कि विज्ञान पर आधारित है। गोंड भारत की सबसे बड़ी जनजाति है। म.प्र. में गोंड जनजाति का निवास सबसे अधिक है। गोंड एक संस्कृति सम्पन्न एवं प्रभाव की दृष्टि से एक सुदृढ जनजाति है। गोंड प्रकृति प्रेमी होते है। प्राकृतिक जीवन उनका आदर्श जीवन होता है। गोंड जनजाति की धार्मिक परम्परा में अनेक देवी देवताओं, आत्मा सम्बन्धी विश्वासों तथा जादूई क्रियाओं का समावेश देखने को मिलता है। अनेक देवी–देवताओं में विश्वास करने के साथ ही गोंड, पूर्वजो की आत्माओं को संतुष्ट करने के लिए विशेष क्रियाएं की जाती हैं। उनका विश्वास है कि प्रत्येक सफलता और असफलता पूर्वजों की आत्माओं की प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता का ही परिणाम होता है। गोंडों की मान्यता के अनुसार बूढ़ादेव साजावृक्ष में वास करते है, वे प्रकृति के पूजक हैं। उनकी देवी–देवताओं पर अटूट श्रद्धा एवं आस्था है। ग्राम–देवी–देवताओं के अतिरिक्त परिवार की खुशहाली के लिए घर पर ही विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा करते हैं, तथा घर के किसी कमरे में अपने पितृ देवी–देवता को स्थापित किया जाता है एवं घर में ही देवस्थल होता है उसे श्मन्दरश कहते है, जिनमें देव का प्रतीक स्थापित रहता है।

कुंजी शब्द :– पितृसत्तात्मक, बहुदेववाद, खेरमाई, बड़ादेव, देवकोठार, पेनकड़ा, परगनादेव, माताडूमा, दशगात्र भूमका मड़ाई आदि।

जनजातीय परिचयः–

जनजाति वह क्षेत्रीय मानव समूह है जो एक निश्चित भू–भाग, भाषा, सामाजिक नियम धार्मिक अनुष्ठान आदि विषयों में एक समानाता सूत्र में बंधा होता है। भारत में रहने वाली जनजातियों को ही सरकारी भाषा में ''अनुसूचित जनजाति'' कहा जाता है। सामान्य रूप से और भी स्पष्ट रूप में कहा जा सकता है कि जनजातियां वे हैं जो सभ्य समाज से दूर जंगलों एवं पहाड़ों में निवास करती हैं। इन जनजातियों की अपनी पृथक संस्कृति है जिसमें अन्य समाजों से पृथक सामाजिक संस्थायें, विश्वास, प्रथायें, परम्पराएं, रीति–रिवाज आदि पाये जाते हैं। गोंड जनजाति भारत के कटि प्रदेश विन्ध्यपर्वत, सतपुड़ा पठार, छत्तीसगढ़ मैदान में दक्षिण तथा दक्षिण–पश्चिम गोदावरी नदी तक फैले हुए पहाड़ों और जगलों में रहने वाली आस्ट्रेलायड नस्ल तथा द्रविड़ परिवार की एक जनजाति जो सम्भवतः पाँचवी छठवीं शताब्दी में दक्षिण गोदावरी तट सहारे मध्य भारत के पहाड़ों में फैल गई। गोंड जनजाति समुदाय वाचक है। भारतीय समाज के निर्माण में गोंड संस्कृति का बहुत बड़ा योगदान रहा है। गोंडवाना भू–भाग में निवासरत गोंड जनजाति की अदभूत चेतना उसकी सामाजिक प्रथाओं, मनोवृत्तियों, भावनाओं, आचरणों तथा भौतिक पदार्थों को आत्मसात करने की कला की परिचायक है, जो कि विज्ञान पर आधारित है। गोंड भारत की सबसे बड़ी जनजाति है। मप्र में गोंड जनजाति का निवास सबसे अधिक है। गोंड एक संस्कृति सम्पन्न एवं प्रभाव की दृष्टि से एक सुदृढ़ जनजाति है। गोंड प्रकृति प्रेमी होते हैं। प्राकृतिक जीवन उनका आदर्श जीवन होता है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि भारत के मूल निवासी आदिवासी ही हैं। गोंड जनजाति उनमें सबसे प्रभावशाली, पुरातन एवं व्यापक समूह है।

मध्यप्रदेश मे गोंडवाना क्षेत्र का नाम गोंड शासकों और गोंडजनों से अभिहित है। आज भी मध्यप्रदेश की जितनी जनजातियां है, उनकी कुल जनसंख्या में से आधे से अधिक गोंड लोगों की है। गोंड जनजाति की पचास से अधिक उपशाखाएं हैं, जिनका अपना स्वतंत्र अस्तिव, स्थान, बोली ओर सांस्कृतिक सामाजिक क्रियाकलाप है। मध्यप्रदेश में गोंड जनजाति की जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 50 लाख से अधिक आंकी गई थी। जो प्रदेश की कुल जनजातीय जनसंख्या का लगभग 35 प्रतिशत थी। गोंड़ अपने परम्परा के अन्तर्गत चली आ रही ग्रामीण वास्तुकता के अनुरूप मकान बनाने में दक्ष होते है गोंड समाज पितृ सत्तात्मक होते है। गोंड समाज अपने रीति रिवाज एवं परम्पराओं से बंधा हुआ है। गोंड जनजाति जन्म से लेकर मृत्यु तक कई परम्पराओं का निर्वाह करती है। विभिन्न गोंड जनजातियों के अपने अलग–अलग गोत्र है, लेकिन कुछ गोत्र ऐसे

हैं, जो गोंड जनजाति की लगभग सभी शाखाओं में पाये जाते है। विभिन्न गोत्र समूह के अपने अपने अलग टोटम है तथा उनके धार्मिक विश्वासों में टोटम सम्बन्धी विश्वासों की प्रधानता है।

गोंड जनजाति की धार्मिक परम्परा में अनेक देवी देवताओं, आत्मा सम्बन्धी विश्वासों तथा जादूई क्रियाओं का समावेश देखने को मिलता है। अनेक देवी देवताओं में विश्वास करने के साथ ही गोंडों में पूर्वजो की आत्माओं को संतुष्ट करने के लिए विशेष क्रियाएं की जाती है। उनका विश्वास है कि प्रत्येक सफलता और असफलता पूर्वजों की आत्माओं की प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता का ही परिणाम होता है। इसके फलस्वरूप यह लोग किसी विशेष वृक्ष अथवा स्थान पर पूर्वजों का निवास होने का विश्वास लेकर वहाँ विशेष वस्तुएं चढ़ाते है, इस जनजाति में जादूई क्रियाओं का प्रचलन भी बना हुआ है। जनजाति की अनेक शाखाओं के लोग यह विश्वास करते हैं कि जादूई क्रियाओं के द्वारा वर्षा लायी जा सकती है तथा आंधी और महामारियों को रोका जा सकता है। परम्परागत रूप से गोंड जनजाति की प्रधान शाखा में भी बहुत से लोग ओझाओं के रूप में काम करते है।

गोंड लोगों के धार्मिक अनुष्ठान एवं धार्मिक जीवन को समझते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि एक लम्बे समय तक गोंड तथा बैगा लोगों के बीच काफी घनिष्ठ सम्बंध रहा है। आज भी गोंड लोग अपने अधिकांश धार्मिक अनुष्ठान एवं धार्मिक संस्कार बैगा जनजाति के लोगो से पूरे करवाते है तथा दक्षिणा के रूप में उन्हें, शराब, मुर्गे, अण्डे, अनाज तथा वस्त्र आदि देते है। एक तरह से बैगा जनजाति के लोग ही उनके पुरोहित है। ऊँचे स्तर वाले राजगोंडो के धार्मिक अनुष्ठान एवं धार्मिक विश्वास बहुत कुछ हिन्दुओं के समान है। गोंड़ो में भारिया लोगों को पूजारी के रूप में देखा जाता है। धार्मिक अनुष्ठान कराने में गोंड जनजाति के संस्कार काफी हद तक हिन्दू जीवन से प्रभावित है। यह सच है कि इनके हिन्दुओं के समान संस्कारों की संख्या अधिक नहीं है लेकिन बच्चे के जन्म सरकार से लेकर नामकरण संस्कार, विवाह संस्कार तथा मृतक संस्कार काफी सीमा तक हिन्दुओं की तरह ही पूरे किये जाते है। इसके बाद भी इन संस्कारों से सम्बंधित विश्वासों में कुछ भिन्नता जरूर देखने को मिलती है। गोंडो में पुत्र एवं पुत्री के जन्म के बीच कोई विभेद नहीं किया जाता है। किसी स्त्री में गर्भाधान के लक्षण दिखने पर कुलदेवता अथवा कुलदेवी की उपासना की जाती है। अन्त्येष्टि अथवा मृतक संस्कार के लिए मृत व्यक्ति का दाह कर्म करने का अनुष्ठान ही प्रचलन में है।

गोंड जनजाति की मान्यतानुसार गोत्र समूह द्वारा ही समाज की संरचना एवं संगठन बनता है जिसे कुल समूह भी कह सकते हैं। गोंड जनजाति में 750 गोत्र माने गये है, जिसके समान अपने को दूरस्थ वास्तविक अथवा मिथकीय एवं काल्पनिक पूर्वजों की संतान मानते है। गोत्र की उत्पत्ति किसी न किसी मिथकीय पुरा कथाओं से जुड़ी रहती है तथा विभन्न देवी देवताओं से भी सम्बंध जोड़ते है एवं इनकी उत्पत्ति एवं विकास किसी निश्चित भू–भाग या स्थान से रहता है, जिसे पेनकड़ा या देवकोठार के नाम से सम्बोधित करते है। अपने गोत्र के देवी–देवताओं के आधार पर अलग–अलग सगा समूह के देवस्थान को परगनादेव या ष्गोत्रदेवताश कहते है।

गोंडो की सामुदायिक मान्यतानुसार गोत्र विभिन्न सगा समूहों में विभाजित किया है

1. यालवेन सगा (चार देव सगा समूह)
2. सैवन सगा (पाँच देव सगा समूह)
3. सवैन सगा (छह देव सगा समूह)
4. येवैन सगा (सात देव सगा समूह)

इनमें पांच देव एवं सात देव मानने वाले आपस में तथा चार देव एवं सातदेव समधारक गोत्र बंधु होंगे। इनमें आपस में वैवाहिक सम्बन्ध नहीं होते अपितु यह चार देव और छहदेव वाले समूह में से किसी भी समूह के साथ वैवाहिक सम्बंध स्थापित कर सकते हैं। समाज में आज भी इन नियमों का पालन किया जाता है। गोंड़ो की सामाजिक मर्यादा का मापदण्ड यह माना जाता है कि वह कुटुम्ब कितने देवता पूजते हैं। अधिक से अधिक मर्यादा सात देवता की मानी जाती है। छह देवता पूजने वाला शुरू के छह देवता पूजेगा ओर अन्तिम एक नहीं। पाँच देवता पूजने वाला शुरू के पाँच देवता पूजेगा अन्तिम दो नहीं। सात देवताओं के नाम कई प्रकार से मिलते है। एक प्रकार यह है बड़ा देव, दूल्हादेव, शतवाली, देहरी वाला, पोचतार पोई, देवाला, और देशीवाला, ये सात हो गये। दूसरा प्रकार यह है बड़ादेव, कालादेव, पालोदेव, मीरीदेव, प्रधानदेव, बूढरदेव और कुंवर देव।

जिस कुटुम्ब का गोत्र जिस पशु पक्षी वृक्ष पर आधारित है उसको वह अपना पूर्वज मानकर मन ही मन प्रणाम करता है। उस पशु–पक्षी का माँस नही खाता है, जो कुटुम्ब नेवला को पूजता है, उसके बारे मे अनुमान होता है कि उसके पूर्वज कभी नागवंशी क्षत्रियों के शत्रु रहे होगें। जो कुटुम्ब शेर को पूजता है, उसके पूर्वज नृसिंग अवतार के उपासक रहे होगें। जो कुटुम्ब कच्छप पूजता है, उसके पूर्वज कच्छप अवतार के उपासक रहे होंगे। जो कुटुम्ब वाराह को पूजते है, उसके पूर्वज वाराह अवतार के उपासक रहे होंगे। जो कुटुंब सर्प को पूजता है, उसके पूर्वज शेषनाग के उपासक रहे होगे। ऐसी बहुत सी मान्यताएं गोत्रों के अध्ययन से सहज ही सिद्ध हो जाती है।

धार्मिक मान्यता एवं देवी देवताओं पर विवरण– गोंड जनजाति की मान्यतानुसार बहुदेववादी के साथ एकेश्वरवाद आदिशक्ति बढ़ादेव पर समस्त समुदाय के लोगों का विश्वास जुड़ा रहता है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक शक्तियां जीव–जन्तु एवं पशु–पक्षी से अपने विश्वास की कड़ी जोड़ते है पितृ आत्माओं को अपने घर पर स्थापित कर उनकी पूजा एवं प्रार्थना की जाती है, जिसे ''माताडूमा'' के नाम से भी जाना जाता है। इन पितृ आत्माओं को एक निश्चित समय पश्चात् उनके भूममाटी या देवकोटार ''पेनकड़ा'' जिस गोत्र का जुड़ा है वहां तोरण–मार कर उनका प्रतीक पत्थर स्थापित किया जाता है, जिससे यह विश्वास किया जाता है कि भूत अथवा देवलोक मे सम्मिलित हो गया।

धार्मिक अनुष्ठान का मुख्य आधार गोत्र समूह का अलग–अलग देवी–देवताओं की मान्यता रहती है। इस जनजाति में गोत्र देवी देवता होते हैं जिन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता है। जो इस प्रकार है– कडाल हुर्रा, पटवांज, मुदिया पेडमा, मुदिया, कोकड मुदिया, रायताल मुदिया, बूढादेव, पांटदेव तथा साथ ही इनमें विभिन्न देवियों की कल्पना की गई है जो इस प्रकार है– मावलीमाता, बावड़ीमाता, सोनई–रूपई, डोकरीमाता, झरनबुंदी, केसर बुदी ये सभी गोत्र की देवियां है जो विभिन्न गोत्र समूहों के सदस्यों मे धार्मिक आस्था एवं विश्वास से जुड़ी रहती है। इनकी समय–समय पर ''जातरा'' का आयोजन भी होता है। इस जातरा द्वारा गोत्र देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पूजा–अर्चना करना विपत्तियों के समय विपत्तियों को हल करने के लिए सामूहिक प्रयास करना तथा गांव क्षेत्र में रहने वाले जनमानस की सुख समृद्धि के लिए अपने ईष्ट देवी–देवताओं से आशीर्वाद प्राप्त करना तथा समय–समय पर उनकी पूजा एवं प्रार्थना करना अनिवार्य होता है। इस प्रकार धार्मिक विश्वास गोत्र देवी देवताओं पर उस गोत्र के लोगों के लिए नैतिक एवं सामाजिक मान्यताओं को पालन करना होता है।

देवी देवताओं के अतिरिक्त गाँवों के जनमानस की खुशहाली के लिए गाँवों में हैजा, महामारी एवं अन्य बीमारियों से सम्बन्धित समस्त गांव की सुरक्षा भूतप्रेत, आत्माओं से निराकरण के लिए ग्राम ''गायता'' या ''भूमका'' द्वारा समस्त गांवों की समृद्धि के लिए अनुष्ठान एवं पूजा–पाठ किया जाता है। ग्राम में कृषि संबंधित कार्य के सम्पादन के लिए गोंड पशुपालन करते हैं, उन पशुओं की सुरक्षा के लिए भी देवी देवताओं की ग्राम गायता द्वारा सामूहिक रूप से पूजा एवं आराधना की जाती है।

यह पूजा कोई मंदिर में न होकर अलग–अलग स्थानों में पेड़ के नीचे या खुले मैदानों में इनकी कोई विशेष प्रतीक बनाकर फसल बोने और फसल काटने तक अलग–अलग समय पर समुदाय के श्गायता द्वारा पूजा कराया जाता है तथा देवी–देवताएं बंधे रहते है। विश्वास रहता है कि कृषि के लिए समय पर वर्षा होगी देवी देवताओं की कृपा से हैजा, चेचक, महामारी एवं संक्रमण से समस्त ग्रामवासियों की रक्षा होगी तथा लोगों मे मान्यता है कि देवी–देवता नदी नाला पहाड़–पर्वत, साजा वृक्ष, पीपल, नीम आदि में प्रतिष्ठित होते है। गोंडों की मान्यता अनुसार बूढ़ादेव साजा में वास करते है। ये प्रकृति के पूजक है उनकी देवी–देवताओं पर अटूट श्रद्धा एवं आस्था है। ग्राम देवी–देवताओं के अतिरिक्त परिवार की खुशहाली के लिए घर पर ही विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा करते है। तथा घर के किसी कमरे मे अपने पितृ देवी देवता को स्थापित किया जाता है एवं घर में ही देवस्थल होता है उसे मन्दर कहते है जिनमे देव का प्रतीक स्थापित रहता है।

गोंड पुनर्जन्म की धारणा को नहीं मानते है और इस बात पर भी गोंडों में विश्वास नहीं किया जाता है कि मरने के बाद व्यक्ति को अपने कर्मफल को भोगना पडेगा। गोंड जनजातियां स्वर्ग एवं नरक की धारणा को भी नहीं मानती है। आत्मा की अमरता पर इनका विश्वास है और यह मानते हैं कि. आत्मा अजर–अमर है। मृत्यु के पश्चात् आत्मा दो में से एक मार्ग को धारण करती है देवयोनी या प्रेतयोनी प्राप्त करते है। आत्माएं, पितर मिलौनी या देवमिलौनी पूजा के पश्चात् देव या

पितरों में मिल जाती है, गोंड लोग इस बात पर विश्वास करते है। मृत्यु संस्कार में ष्दशमानी या दशगात्र प्रथा गोंडों में महत्वपूर्ण क्रिया कर्म का अनुष्ठान माना जाता है।

गोंड जनजाति के मान्य देवी–देवताओं को भिन्न–भिन्न प्रतीकों द्वारा पहचाना जाता है, जिसमें लकड़ी से निर्मित ''आंगा'' इनमें लोगो के विश्वास पर्यन्त उन्हें सोने–चांदी की भेंट चढ़ाते है। ''डांगपालो'' यह लम्बे बास में कपडे के झण्डे होते है जिनमें पीतल या चाँदी के घुँघरू युक्त कलश तथा विभिन्न देवी देवताओं के झण्डे के कपड़े का रंग अलग–अलग होता है। इसके साथ ही छड़ी– बरछी डोली सांकल या अन्य लकड़ी से निर्मित साधनों की प्रतीक के रूप में पूजा की जाती है। देवी देवता के उत्सव ''मड़ाई'' अथवा ''जातरा'' होता है, तब देवी देवताओं के पूजारी या ''सिरहा'' के उपर देवी विराजमान होती है। देवी–देवता नाचते है, कांटेदार सकली से पीठ में स्वयं द्वारा वार भी किया जाता है।

गोंड जनजाति में बहुदेववाद को मानते है। गोंड प्रकृति की अपार शक्तियों का पूजक है। गोंड जनजाति की धार्मिक अनुष्ठानों में अनेक देवी–देवताओं आत्मा सम्बंधी विश्वासों तथा जादुई कियाओं का समावेश देखने को मिलता है। यह लोग अनेक देवी–देवताओं की आराधना करते हैं।

आनमाता–अन्नमाता का उच्चारण अन्नपूर्णा देवी । जब फसल को काटकर खलिहान में रखते है तो उनके बीच में एक लकड़ी गाड़ दी जाती है यही अन्नमता है। अन्न प्रत्यक्ष देवता है।

खीलामुढिया–पशुशाला में हर साल पूजा जाता है अहिर और चरवाहों का देवता पशुपालक इनकी पूजा करते है।

खेरमाई– ग्राम्य देवी वह स्थान जहां गांव के देवता रखे जाते है। आषाढ और क्वार में पूजा होती है। मूर्गे नारियल आदि पूजा में चढ़ाये जाते है। गांव के बाहर एक सुन्दर चबूतरेपर स्थापना होती हैं

घटोईवाली– नदी–नाला की देवी नदी नाला पार करने के समय सुमरन करते है। नदी नाला में पानी भरते समय इस देवी का स्मरण करते है।

चूल्हादेवी– मरे हुए आदमी का श्राद्ध का एक रूप जब तक मरे हुए आदमी की क्रिया पूरी नहीं हो जाती तब तक मृतक की आत्मा को देव में नही मिला देते तब तक भोजन पकने के तुरंत बाद, थोडा सा भोजन उस मृतक की आत्मा के लिए अलग रख देते है जिससे कि मृतक को कष्ट न हो। घनशाम देव फसल की रक्षा करने वाला देवता कार्तिक के महीने में गांव भर के लोग इस देवता के स्थान में इकट्ठा होकर पूजा करते हैं। भाव आते हैं। भाव में कोई लोग जंगल में भाग जाते है। इस विचार से यदि नहीं भागेगे, नहीं छिपेगे तो **घनशाम देव**– हम सबको समाप्त कर देगा। फिर गांव वाले उस व्यक्ति को पकड़कर ले जाते है सामूहिक पूजा होती है।

ठाकुरदेव– घर– गृहस्थी का देवता तथा खलिहान का देवता ठाकुरदेव सर्वव्यापी माना जाता है। अतः ठाकुरदेव की मूर्ति नहीं बनती और न ठाकुर देव की वेदी बनती है। ठाकुर देव की निराकर कल्पना है। बोने के समय बीज निकालते समय ठाकुर देव की प्रार्थना की जाती है।

दूल्हादेव– विवाह के अवसर पर सकुशल ब्याह हो जाने के लिए पूजा की जाती है ब्याह हो चुकने पर संतान के लिए तथा सौभाग्य के लिए पूजा होती है।

धरती माता– दूसरा नाम पृथ्वीमाता है। पृथ्वी बहुत विस्तृत है। अतः मूर्ति में कल्पना नहीं की जाती। भोजन के पहले धरती माता के लिए थोड़ा सा अन्न पृथ्वी में अर्पित कर देते है।

नागदेव– चांदी अथवा लोहे के नागमूर्ति को स्थापित करके पूजने से सर्पों से रक्षा होती रहती है। कुछ लोग अपने घरों में पूजते है तथा कुछ लोग सामूहिक पूजा के पक्षपाती है। माना जाता है कि नागदेव की पूजा करने वाला सर्पदंश से सुरक्षित रहता है। इस पूजा को पीढ़ा बैठाना कहते है, बड़ी धूमधाम से पूजा होती है। किसी को सर्पदंश हो चुकने पर पीढ़ा बैठाकर नागदेव की आराधना की जाती है। बेमौसम भी करना पड़ता है। मुख्य भक्त लोगों को नागदेव के भाव आते है तथा भाव में बताये गये विधान के अनुसार आराधना की जाती है।

नारायणदेव– जिस देवता को हम लोग सूर्यनारायण कहते है। उसी देवता को गोंड़ लोग नारायण देव कहते है। नारायण देव की पूजा प्रकृति के अंश की पूजा है। गोंडो के क्षेत्र में सूर्य की बहुत अधिक मूर्तिया पाई जाती है। नारायण देव की पूजा में कुछ लोग सूकर, मुर्गा आदि चढ़ाते है।

बढ़ादेव– गोंडों का सबसे बड़ा देवता बड़ादेव है। जिस पर अटूट आस्था रखते हैं व इनकी शक्ति को सर्वसम्पन्न मानते है बड़ादेव इनका रूपलिंगों रायलिंगो बडापेन है जिन्हें वे शंकरदेव के रूप मानते है। बहुत सी गोंड शाखाएं बड़ा देव से ही अपनी वंश परम्परा होने का विश्वास करती है।

गोंडो का विश्वास है कि बड़ादेव ने एक लम्बे समय तक कांटो पे बैठकर तपस्या की थी इस कारण जिस स्थान पर उनकी स्थापना होती है, वहां नीचे लोहे की कीले गाढ़ दी जाती है।

बाघदेव– घास, पतली लकड़ियां तथा मिट्टी से बाघ की मूर्ति बनाकर उस पर लम्बी काली रेखाये चित्रित की जाती है इस मूर्ति की स्थापना बलि देकर तथा प्रसाद बॉटकर की जाती है। झोपड़ी के एक कोने में दो जल भरे हुए मटके रखे जाते है तथा एक दूसरे कोने मे मोर पंखो का संग्रह बापदेव खेती तथा गांव की रक्षा करता है। इसकी पूजा काले बकरे या काले सूकर से होती है।

भैंसासुर– भैंसों की सार का रक्षक गहरे जल में रहकर पानी में डूबी हुई भैसों की रक्षा करता है। सूकर की बलि लेकर ही प्रसन्न होता है। यह भैसों की पशुशाला का देवता होता है।

मरको देव– ये बड़े क्रूर और कठोर होते है। ये देव उन मृतकों के साथ रहते हैं जिनकी अकाल मृत्यु हुई हो। आग से, पानी से, पहाड़ आदि से अकाल मृत्यु से पीड़ित मृतकों की आत्मायें इन देव के साथ रहकर अपने सम्बंधियों को पूजा के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

मरहाईमाता– मृत्यु की देवी। इनका प्रधान अस्त्र हैजा है। हैजा के आक्रमण जब पड़ोस में, गांव में होते है तब मरहाई माता की पूजा होती है ताकि हैजा के कारण आराधक के मकान में कोई मृत्यु न होने पाये।

मसकासी देव– शिकार के देवता शिकार को जाने के पहले इस देवता की पूजा होती है। इसकी अप्रसन्नता से शिकार मिलते ही नहीं उस देवता की स्थापना पत्थरों की बनी हुई वेदी पर रखे हुये धनुष बाण में की जाती है।

मसानदेव– शमशान का देवता मृतक कार्य करने के पहले इस देवता की पूजा होती है।

शक्तिमाता– माता की प्रभूता सर्वत्र सर्वश्रेणी में मानी गई है। शक्ति के उपासकों का दावा है कि शक्तिमाता की पूजा अनादिकाल से है देवी के उपासक को पंडा कहते है। हर गांव में पंडा की मडिया होती है। जहां पर शक्ति की स्तुति की जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गांव की खुशहाली के लिए गोंड़ जनजाति में पराशक्तियों पर गोंड जनजाति के मान्य देवी देवताओं को भिन्न भिन्न प्रतीकों द्वारा पहचाना जाता है। गोंड जनजातियों में पराशक्तियों पर गहरा विश्वास होता है। गोंड लोग उनकी आराधना याचना कर अपने को सूखी सम्पन्न बनाते है।

निष्कर्ष– उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि गोंड जनजाति में विभिन्न देवी–देवताओं पर अटूट विश्वास और विभिन्न देवी– देवाताओं के मार्गदर्शन में जीवन निर्वाह करता है। गोंड जनजाति का विश्वास है कि मानव जीवन के ऊपर भी कोई शक्ति है जिसके निर्देश से ही जीवन संचालित होता है। इसलिए गोंड जनजाति धार्मिक अनुष्ठान के साथ–साथ विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा आराधना करती है।

संदर्भ –

1. डॉ. शिवकुमार तिवारी– मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी (2005) पृ.क्र. 94–95
2. डॉ. डी. एस. बघेल, समाजशास्त्र, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल (2018) पृ.क्र. 448–452
3. प्रोफेसर डॉ.जी.के. अग्रवाल समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा (2018) पृ.क्र. 238–243
4. डॉ. एल.एस.गजपाल और डॉ. ए.पी. श्रीवास्तव, समाजशास्त्र रामप्रसाद एंड संस भोपाल पृ.क्र. 273–243
5. डॉ. विमल अग्रवाल, समाजशास्त्र. एस.बी.पी. डी. पब्लिकेशन आगरा (2019) पृ.क्र. 186–187
6. राम भरोस अग्रवाल, गोंड जाति का सामाजिक अध्ययन, गोंड संस्कृति इतिहास गोंडी पब्लिक ट्रस्ट मंडला पृ.क्र. 12–22